अनुक्रमणिका

		07
Editorial		08-12
संदेश		15-16
1.	भारतीय साहित्य में ईश्वर की परिकल्पना **डॉ. पी. के. जयलक्ष्मी**	17-20
2.	आधुनिक हिंदी साहित्य जगत में एक नये भक्ति आंदोलन का श्रीगणेश **डॉ. एस. कृष्ण बाबु**	21-22
3.	साहित्य और धर्म : अध्यात्मिकता का मार्ग **डॉ. एस. दीप्ति**	23-25
4.	हिंदी साहित्य में मूल्यों की अभिव्यक्ति **प्रो. एन. सत्यनारायण**	26-28
5.	उत्तर आधुनिक काल में मानवीय मूल्यों का महत्व **डॉ. काकानि श्रीकृष्णा**	29-30
6.	बौद्ध धर्म : मानव धर्म **डॉ. ए. रमणी**	31-32
7.	साहित्य और मानवीय मूल्य **डॉ. लीलावती गोपी रेड्डी**	33-35
8.	भारतीय साहित्य में आध्यात्मिकता **बोब्बिलि राधारानी**	36-38
9.	भारतीय साहित्य में मिथकीय चेतना और आध्यात्मिकता **एम. पुष्पलता**	39-40
10.	कुवेम्पु कृत श्री रामायणदर्शनम में मानव -मूल्य **डॉ. के. नीरजा**	41-42
11.	भारतीय साहित्य-आध्यात्मिकता **डॉ. एन. इंदुवदना**	43- 46
12.	मिथकीय चेतना के प्रचलन में श्री परसाई की व्यंग्य कथाओं का योगदान **के. वी. राजेश्वरी/डॉ. के. सुधा**	47-48
13.	मानव जीवन और अध्यात्म **डॉ. के. अनिता**	49-51
14.	वैष्णव धर्म-भागवत धर्म **डॉ. भाग्यवति**	52-53
15.	हिंदी साहित्य में बौद्ध धर्म के विचार **डॉ. के. श्याम सुंदर**	54-56
16.	हिंदी साहित्य में व्यक्त अध्यात्मिक भावनाएं **डॉ. सीहेच. वी. महालक्ष्मी**	

POSITIVE TALK

ISSN 2582-6247 MULTIDISCIPLINARY, PEER-REVIEWED (REFEREED) JOURNAL

MULTILINGUAL INTERNATIONAL CONFERENCE

25-26 September 2023

భారతీయ సాహిత్యం - ఆధ్యాత్మికత | भारतीय साहित्य - आध्यात्मिकता
भारतीय साहित्ये - आध्यात्मिकता | Indian Literature - Spirituality

Executive Editor
Dr. P.K. Jayalakshmi

Editor
Krishnakant

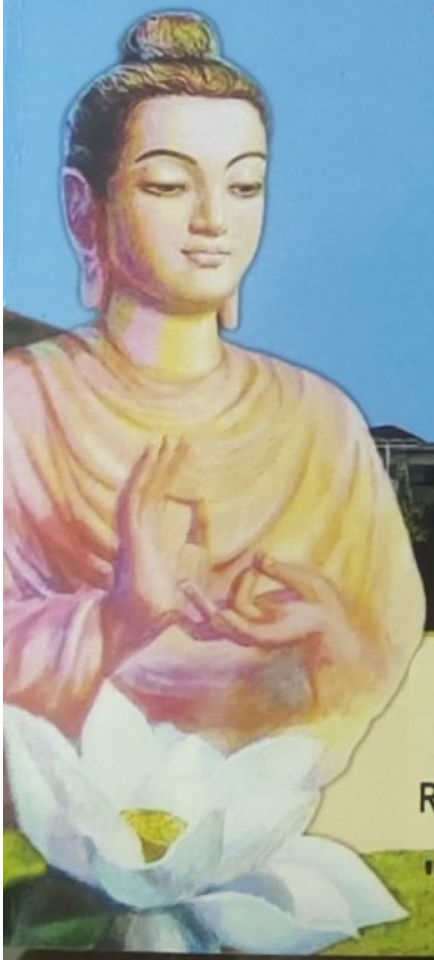

St. Joseph's College for Women (A)
Visakhapatnam 530 004 AP INDIA
REACCREDITED BY NAAC & ISO 9001 : 2015, 14001 : 2015 CERTIFIED

"Don't prove yourself, Just improve yourself."

मिथकीय चेतना के प्रचलन में श्री परसाई की व्यंग्य कथाओं का योगदान

के. वी. राजेश्वरी
शोधार्थी, आंध्र विश्वविद्यालय
डॉ. के. सुधा
शोध निर्देशक , महिला विशाखा डिग्री कॉलेज

मानव मात्र के हित के लिए इस संसार में जो भी साधन उपलब्ध हैं, उनमें साहित्य का स्थान सर्वोपरि है। साहित्य, ललित कलाओं में सर्वोत्कृष्ट कला माना जाता है और इसके द्वारा लोक कल्याण की संभावना निर्विवाद है । साहित्य की गद्य विधाओं में मानव जीवन के विविध क्षेत्रों से संबंधित पात्र एवं प्रसंग देखने को मिलते हैं। परंतु उनका जो प्रभाव पाठकों पर पड़ता है, उसकी तुलना में हास्य और व्यंग्य प्रधान रचनाओं का प्रभाव अधिक माना जाता है। आगे यह भी कहा जा सकता है कि भारतीय पौराणिक आख्यानों पर आधारित मिथकीय कथाओं को समसामयिक जीवन और जगत के परिप्रेक्ष्य में उन्हें हास्य भरे स्वर में प्रस्तुत करके पाठकों को सकारात्मक संस्कारों का प्रचलन किया जा सकता है। स्वतंत्रोत्तर हिंदी कथा साहित्य के अंतर्गत ऐसी सामग्री का प्रणयन करने वाले कथाकारों में श्री हरिशंकर परसाई का नाम सर्वोपरि माना जा सकता है। उनकी कथा सामग्री में भारतीय पौराणिक जगत से संबंधित प्रख्यात प्रसंगों को लेकर उनके ऊपर व्यंग्य प्रधान रचनाएँ प्रस्तुत करने की उनकी चेष्टा नितांत सराहनीय है। इसी संबंध में श्री परसाई जी की व्यंग्य कथाओं के कुछ व्यंग्य प्रसंग इस प्रकार हैं ।

श्री परसाई की 'आध्यात्मिक पागलों का मिशन' नामक व्यंग्य कथा में लेखक ने भारतीयों और अमेरीकियों के साथ-साथ दोनों देशों के शासन व्यवस्था पर भी सीधे व्यंग्य के बाण साधे हैं। अमेरिका ने भारत के वेदों, शास्त्रों और उपनिषद से ज्ञान ग्रहण करके उन्नति की है। वह देश 'विश्व गुरु' बनकर दुनिया के सामने खड़ा हुआ है। पर

विश्व को ज्ञान प्रदान करने वाले भारतीय अब अमेरिका का स्तुति गान करने में लगे हुए हैं। भारत से इतना सब लेने के बाद भी अमेरिका सही सभ्यता विकसित करने में पीछे पड़ गया है। इसलिए वहाँ की पीढ़ी अब पथभ्रष्ट हो गई है। निम्नलिखित प्रसंग इस तथ्य की पुष्टि करता है- 'भारत के सामने अब एक बड़ा सवाल है -अमेरिका को अब क्या भेजें? कामशास्त्र वे पढ़ चुके, योगी भी देख चुके। संत देख चुके। साधु देख चुके। गाँजा और चरस वहाँ के लड़के पी चुके। भारतीय कोबरा देख लिया। गिर का सिंह देख लिया। जनपथ पर 'प्राचीन' मूर्तियाँ भी खरीद लीं। अध्यात्म का आयात भी अमेरिका काफी कर चुका और बदले में गेहूँ भी दे रहा है।'

उपर्युक्त प्रसंग से स्पष्ट हो जाता है कि- अमेरिका की उन्नति में कुटिलता है। सकारात्मक सभ्यता विकसित ना करने के कारण उनकी उन्नति अवनति में परिवर्तित हो रही है क्योंकि उनमें मानव जीवन के प्रति गंभीरता की मात्रा बहुत कम है। अमेरिका जैसा सभ्य माना जाने वाला देश भारत के शास्त्रों की विषय-वस्तु का किंचित संशोधन कर उन पर अपना हक जमाता है। भारत और अमेरीकी प्रजा के स्वभाव में भी परिवर्तन की आवश्यकता है। देश की प्रजा के स्वभाव से ही उस देश की सभ्यता बनती है। अत: हर एक नागरिक को देश की सभ्यता और संस्कारों का रक्षक होना चाहिए।

लेखक आगे कहते हैं कि- 'अमेरिकियों को विनाश अच्छा लगता है। उनकी क्रूरता का उदाहरण है, सन् 1972 में वियत्नाम के हिनाई पर बम की वर्षा करना। फिर भी उनका ध्यान भारत पर है कि- अब भारत से और क्या ले जा सकें? लेखक की चिंता अमेरिकियों पर ही नहीं, भारतीयों पर भी है।' विश्व को संस्कृति और सभ्यता का पाठ सिखाने वाले भारतीय डॉलर कमाने की आशा में अमेरिका चले जा रहे हैं। अब तक सब कुछ भारत से अमेरिका चला गया है। सिर्फ एक ही विषय बचा है, जो अब तक अमेरिका ने भारत से नहीं लिया। वह अमेरिकियों के लिए बिल्कुल नया है। स्वयं लेखक के शब्दों में यह कथन उल्लेखनीय है- 'मैं जानता हूँ, आध्यात्मिक मिशनें 'स्मगलिंग' करती रहती हैं। पर भारत सरकार और आम भारतीयों को यह नहीं मालूम कि लोगों को 'स्वर्ग' में भी स्मगल किया जाता है। तस्करी सामान की भी होती है - और आध्यात्मिक तस्करी भी होती है। कोई आदमी दाढ़ी बढ़ाकर एक चेले को लेकर अमेरिका जाए और कहे, 'मेरी उम्र एक हजार साल है। मैं हजार सालों से हिमालय में तपस्या कर रहा था। ईश्वर से मेरी तीन बार बातचीत हो चुकी है।' विश्वासी पर साथ ही शंकालु अमेरिकी चेले से पूछेगा - क्या तुम्हारे गुरु सच बोलते हैं? क्या इनकी उम्र सचमुच हजार साल है? तब चेला कहेगा, 'मैं निश्चित नहीं कह सकता, क्योंकि मैं तो इनके साथ सिर्फ पाँच सौ सालों से हूँ।'

अमेरिका को अच्छा पागल बनाने के लिए अब भारत के पास आध्यात्मिक पागलों का मिशन एक ही चीज बची है। हमेशा भ्रम में रहने वाले अमेरिकी उन पर विश्वास कर लेंगे। इस कथा के आधार पर कहा जा सकता है कि- 'आध्यात्मिक मार्ग का अनुसरण करने वाले चाहे वह भारतीय हो या अमेरिकी सरकारी दुकान से शक्कर ना लेकर ब्लॉक में ही शक्कर खरीदने लगते हैं।' अर्थात वे गलत काम करना नहीं छोड़ते। आध्यात्मिकता भी अब व्यापार बन गया है। इसमें कुछ स्वार्थी लोग और नेता भी शामिल हैं, जो पैसे कमाने की लालच में आध्यात्मिक मार्ग का सहारा ले रहे हैं। इसके लिए आध्यात्मिक पागलों जैसा अभिनय करना आना चाहिए। इस संदर्भ में लेखक का कथन इस प्रकार है- 'मैं तो नया अंतरराष्ट्रीय धंधा चालू करना चाहता हूँ -'डिवाइन ल्यूनेटिक मिशन'। दुनिया के पगले शुद्ध पगले होते हैं - भारत के पगले आध्यात्मिक होते हैं।

मैं 'डिवाइन ल्यूनेटिक मिशन' बनाना चाहता हूँ। इसके सदस्य वही लोग हो सकते हैं, जो पागलखाने में न रहे हों। हमें पागलखाने के बाहर के पागल चाहिए याने वे जो सही पागल का अभिनय कर सकें। योगी का अभिनय करना आसान है। ईश्वर का अभिनय करना भी आसान है। मगर पागल का अभिनय करना बड़ा ही कठिन है। मैं योग्य लोगों की तलाश में हूँ। दो-एक प्रोफेसर मित्र मेरी नजर में

हैं जिनसे मैं मिशन में शामिल होने की अपील कर रहा हूँ।'

उपर्युक्त प्रसंग में वर्तमान समसामयिक समाज में पढ़े-लिखे लोगों पर भी व्यंग्य छलकता है। पढ़े-लिखे सज्जन भी देश को सही दिशा निर्देशन नहीं दे रहे हैं। समाज में व्याप्त कुरीतियों का समर्थन कर रहे हैं। वर्तमान युग का संसार स्वार्थी लोगों से भर गया है। परसाईजी ने समकालीन संदर्भों और प्रश्नों को मिथक के द्वारा बहुत ही सहज और प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है। किसी भी देश की जनता के चरित्र के निर्माण में मिथक का महत्वपूर्ण स्थान होता है। यह बात तथ्य है कि मिथक इतिहास ही नहीं, बल्कि वर्तमान समाज का प्रतिबिंब भी है।

परसाई जी ने अपनी मिथकीय कथा 'सुदामा के चावल' के द्वारा वर्तमान प्रशासकीय व्यवस्था पर व्यंग्य के प्रहार किए हैं, जो समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार और कुटिल राजनीति को दर्शाता है। इस कहानी का पात्र सुदामा के शब्दों में निम्नलिखित वाक्य इस दृष्टांत को स्पष्ट करता है। सुदामा कहते हैं- 'दो मुट्ठी चावल और दो लोक' वाली बात झूठ है। सुदामा ने कृष्ण से दान नहीं लिया, उसने श्रीकृष्ण से सौदा किया।' कहानी में सुदामा अपने मित्र श्री कृष्ण से मिलने द्वारका जाते समय सुदामा की पत्नी उन्हें चावल उधार लेकर देती है।क्योंकि वह जानती है कि- 'राजपुरुष बिना भेंट लिए किसी का कोई काम नहीं करते।' मेरे घर में एक पाव चावल भी ना हों, ऐसी बात नहीं थी। पर ब्राह्मणी जानती थी कि-'राजपुरुष उधारी या छोरी के माल से बहुत प्रसन्न होते हैं।' उक्त प्रसंग से स्पष्ट होता है कि- नेतागण काम करने के लिए पैसे लेते हैं। बिना पैसे दिए वे अपने बंधु-मित्रों का भी काम करना पसंद नहीं करते। उस पर भी उन्हें 'काला धन' पर ज्यादा रुचि रहती है।

'श्रीकृष्ण के महल के सामने सुदामा को द्वारपाल खाली हाथ ही भेजते हैं, तो कृष्ण सुदामा से पूछते हैं कि - "कहाँ गए चावल? मैंने अपने दिव्य दृष्टि से देख लिया था कि- भाभी ने मेरे लिए गमछे में चावल बाँध दिए थे। तब सुदामा मन ही मन कहने लगते हैं कि- हे मेरे राज मित्र! जिस दृष्टि से तुम मित्रों की पत्नियों को पति के गमछे में चावल बाँधते देखते रहते हो, उससे लोगों की गरीबी और भुखमरी क्यों नहीं देखते?'

कथाकार का यह प्रश्न सीधे प्रशासकीय व्यवस्था से है, जो जनता की आर्थिक परिस्थितियों को देखकर भी अनदेखा करते हैं। प्रजा की गरीब दयनीय स्थिति, उनका भूखों मरना शासक देखना नहीं चाहते। समाज के विकृत यथार्थ से वे दूर रहना ही पसंद करते हैं। नेता तो दूर, उनके कर्मचारी भी स्वयं को देवता मानते हैं। उनसे मिलने के लिए भी 'खुरचन' देना पड़ता है।

राज कर्मचारी सुदामा से पूछते हैं कि-'अरे! कुछ 'खुरचन' का सिलसिला भी है या यूं ही मिलने चला आया है? शासक को जो भेंट समर्पित किया जाता है, उसमें राज कर्मचारी का भी कुछ हिस्सा बना रहता है।' सुदामा के पास चावल की पोटली को देखकर वे समझते हैं कि वे तंत्र-मंत्र से सिद्ध चावल हैं, जो मनचाहे पहल प्रदान करेंगे। इसलिए सब कर्मचारी पूरे चावल खा लेते हैं। धमकी भी दी जाती है कि-'देख, ये ब्राह्मण के बच्चे! यदि तूने महाराज को यह चावल वाला मामला बताया तो तेरे ब्राह्मणी विधवा हो जाएगी।'

इस धांधली को छिपाकर रखने के लिए सुदामा ने श्रीकृष्ण से सौदा किया। श्रीकृष्ण के राज्य के इस रहस्य को गुप्त रखने के लिए सुदामा ने अपना ईमान, अपना सत्यव्रत को एक लाख स्वर्ण मुद्रा, एक भवन और एक ग्राम की कीमत पर बेच दिया।

प्रस्तुत कहानी शासकीय व्यवस्था पर की हुई निष्ठुर व्यंग्य है। वर्तमानकाल में प्रशासकीय व्यवस्था खोखली हो गई है। शासक प्रजा की भलाई के लिए नहीं अपने स्वार्थपूर्ण इच्छाओं को पूरे करने में मग्न रहते हैं। सरकारी कार्यालय में रिश्वतखोरी भ्रष्टाचार बढ़ गए हैं। छोटे-छोटे सरकारी कर्मचारियों से लेकर बड़े-बड़े अधिकारियों तक को रिश्वत दिए बिना उनसे मिलना संभव नहीं हो पा रहा है। राजनीतिक व प्रशासनिक क्षेत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार को स्पष्ट रूप से प्रकट करने के लिए श्री परसाईजी ने 'सुदामा के चावल' नामक व्यंग्य कहानी को पौराणिक कथा के आधार पर व्यंग्यात्मक रूप में गढ़ा है। इस स्थिति का चित्रण व्यंग्यात्मक रूप से इस कहानी में प्रस्तुत किया

हमारे विचार सकारात्मक रहें। प्रेम, करूणा, सेवा, सहानुभूति जैसी बातें ही हमारा सृजनात्मक विकास करेंगी।आध्यात्मिक दृष्टिकोण रखने वाला व्यक्ति लौकिक और आध्यात्मिक दोनों प्रकार की विचारधाराओं में एक्य स्थापित कर अपना जीवन व्यतीत करता है। आत्म कल्याण केलिए हमें भटकने की आवश्यकता नहीं है। अपने आपको जानने की, समझने और भीतर से परखने की आवश्यकता है। मनुष्य के पास सबसे बड़ी पूंजी हैं उसके अच्छे विचार क्योंकि धन और बल हर किसी को गलत राह पर ले जा सकता है किन्तु अच्छे विचार हमेशा ही अच्छे कार्यों केलिए ही प्रेरित करेंगे। आध्यत्मिक्ता का संबंध मनुष्य के आंतरिक जीवन से है और इसकी शुरूआत होती है उसकी अंतर्यात्रा से हम अपने आप को जानने का प्रयत्न भी करें। आध्यात्मिक ज्ञान मानव को पतन की ओर अग्रसर होने से रोकता हैं। समर्पण भक्ति बिना जीवन सफल नहीं होता ।

नैनं छिद्रन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावक:
न चैनं क्लेदयन्त्याप ? न शेषयति मारूत ॥

अर्थात: आत्मा को न शस्त्र काट सकते हैं ,न आग उसे जला सकती है। न पानी उसे भिगो सकता है, न हवा उसे सुखा सकती है।

आध्यात्मिकता के तीन मूल प्रकार हैं। आध्यात्मिक व्यक्तिवाद, आध्यात्मिक सामूहिकता और आध्यात्मिक संवाद। व्यक्तिवाद आध्यात्मिकता भीतर पर केंद्रित है। सामूहिकतावादी आध्यात्मिकता धर्म की संस्थाओं पर केंद्रित है। व्यक्ति के जीवन में कई तरह के पड़ाव आते रहते है। अध्यात्म से व्यक्ति को भीतर से आत्मविश्वास व मानसिक बल मिलता हैं। व्यक्ति चाहे कैसा भी जीवन जी रहा हो, मन अशांत ,व्याकुल या अस्थिर है ? उसे सदग्रंथ व अध्यात्म वा सहारा मिल जाये तो जीवन की यात्रा और सुगम व सरल हो जाती है। हमें चाहिए कि हम अपने में गुणों की वृद्धि करते रहें। ब्रह्मचर्य , सच्चरिता, सदाचार, मर्यादा-पालन और अपनी सीमा में अनुशासित रहना आदि ऐसे गुण हैं,जो जीवन जीने की कला के नियम माने गये हैं। अध्यात्म मानव जीवन के चरमोत्कर्ष की आधारशिला है। मानवता का मेरूदण्ड है। इसके अभाव में अशांति एवं असंतोष की ज्वालाएं मनुष्य को घेरे रहती है। मनुष्य जाति की अगणित समस्याओं को हल करने और सफल जीवन जीने केलिए अध्यात्म से बढ़कर कोई उपाय नहीं हैं। एक महान व्यक्ति ने कहा कि 'मंदिर तक पहुंचना ,तन का विषय हैं,लेकिन ईश्वर तक पहुंचना मन का विषय है।'

संदर्भ ग्रंथ :

1.आस्तिकता मानव जीवन की अनिवार्य आवश्यकता - आचार्य सईराम शर्मा-युगनिर्माण प्रेस-गायत्री तपोभूमि, मथुरा

2. https://www.jagran.com/editorial/apnibaat-11689934.html

3.https://navbharattimes.indiatimes.com/astro/spirituality

లీడర్

ముగిసిన బహుభాషా అంతర్జాతీయ పదమ్